शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
Vol. X, No. 1, pp (43-48), Jan-March 2019

भारतीय सामाजिक जीवन में महिलाओं का बदलता स्वरूप

डॉ0 सत्येन्द्र कुमार
एसो0 प्रोफे0, राजनीति विज्ञान विभाग
जे0 पी0 कॉलेज नारायणपुर
तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर
Email : krashutosh.pashak@gmail.com

सारांश

हमारे समाज में नारी के सम्मान एवं उपेक्षा की दोहरी स्थिति दिखाई पड़ती है। जहाँ हमारी प्राचीन संस्कृति महिलाओं को सृष्टि की जननी मानती हैं और उन्हें शक्ति का स्त्रोत समझती हैं, वहीं आज भी समाज का बहुत बड़ा भाग महिलाओं के पुरूषों की अपेक्षा निम्नतर स्थिति प्रदान करने की मानसिकता से निकल नहीं सका है। प्राचीनकाल की ओर मुड़कर देखें तो पाएगें कि नारी सदैव पूज्यनीय रही है – ''यत्र नार्यस्त्र पूज्यन्ते रमन्ते तंत्र देवता''। आज भी पूज्यनीय है, पर आज महिलाओं का काम केवल खाना बनाना और झाड़ू लगाना तक ही सीमित नहीं रह गया है। घर की चहारदीवारी में कैद रहकर जीवनयापन की उसकी मजबूरी नहीं है। आज उसे आवश्यक्ता है निरक्षरता से लड़कर साक्षर बनने की, लोकाचारों और परम्पराओं को तोड़ने की, शोषण के विरूद्ध आवाज उठाने की अत्याचार के विरूद्ध हौसले बुलंद रखने की तथा आबादी की बाढ़ में अंकुश लगाने की । आज साक्षर नारी समाज में अपना स्थान बना रही है, वर्चस्व बढ़ा रही है, किन्तु निरक्षर महिला घूंघट की ओट में सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति बनकर सब कुछ सहन कर रही है। पर्दानशी होकर, मूक रहकर पीछे हट रही है। बराबरी की भागीदारी से मुकर रही है और खुद को एक चहारदीवारी में कैद कर ली है। परन्तु शनैः–शनैः भारतीय समाज में नारी की तस्वीर बदल रही है। क्यों न हो ? सृष्टि के रचयिता ब्रह्माजी ने नारी को वर्चस्व प्रदान करने के कई उपदान दिए, पुरूष–महिलाओं के बीच भेद रखा, नारी को ऐश्वर्य और वैभव लुटाया, रूप–हुस्न का जलवा दिया एवं स्वभाव माधुर्य दिया। हमारे देवगण भी देवियों की ही उपासना करके अपना मनोरथ पूर्ण करते हैं। माता वैष्णवी ने महिषासुर दैत्य का वध किया। राम–रावण युद्ध के दौरान श्री राम ने आदिशक्ति भवानी की आराधना की, देवी लक्ष्मी और विद्या की देवी सरस्वती की सभी उपासना करते है। सती सावित्री, अनुसूईया की कोई बराबरी नहीं कर पाया। महिलाओं ने इस संसार में युद्ध करवाए तो दोस्ती भी बढ़ाई। प्यार से परिवार बसाया तो आक्रोश से तलवार भी उठाई। इस प्रकार भारतीय समाज में नारी की स्थिति में सषष्टि के प्रारम्भ से उत्तरोत्तर बदलाव आता रहा है।

प्रस्तावना

भारतीय समाज में नारी की इस बदलती तस्वीर को इन शीर्षकों में देख सकते हैः–

आदि काल में नारी का स्वरूप

खुदाई से प्राप्त बहुसंख्यक नारी मूर्तियों से अनुमान लगाया जाता है कि सैन्धव मातृसत्तात्मक था। उत्खनन में प्राप्त अनेक नारी की मूर्तियाँ यह प्रमाणित करती है कि सिन्धु सभ्यता में परम नारी की पूजा भी प्रचलन में थी। सिन्धुवासी मातृदेवी की उपासना अनेक रूपों में करते थे। उत्खनन में हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो के लगभग प्रत्येक घर से नारी के विभिन्न रूपों की मूर्तियां प्राप्त हुई है। उदाहरणार्थ नारी की एक मूर्ति, जिसमें वह शिशु को स्तनपान करा रही है, को जननी का देवीकरण तथा एक अन्य नारी मूर्ति, जिसके सीने पर एक पंक्षी पंख फैलाये बैठा है, को सिन्धुवासियों द्वारा पोषिका–पालिका जननी माना गया है।

वहीं 'वैदिककाल' में नारियां समाज में पुरूषों के बराबर भाग लेती थी। वैदिककाल में केवल राजकुमारियाँ ही स्वयंवर करती थी। सामाजिक जीवन में कन्या, बहन, पत्नी और माता सभी रूपों को महान एवं पूज्यनीय समझा जाता था। 'अर्थववेद' में तो उन्हे घर और परिवार की सामग्री समझा गया। रामायण एवं महाभारत में भी महिलाओं का पुरूषों की तरह सामाजिक एवं धार्मिक तथा शिक्षा के अधिकार प्राप्त थे। कहीं कहीं उन्हे शुरू से ही श्रेष्ठ समझा जाता था। लेकिन महाभारत के अंतिम चरण में महिलाओं की स्थिति में गिरावट आने लगी। महाभारत काल में तो महिलाओं को देवदासी होने का भी वर्णन मिलता है। 'मनु संहिता' में एक स्थान पर कहा गया है कि ''जिस कुल में नारियों की पूजा की जाती है उस कुल के देवता प्रसन्न रहते है, जहाँ ऐसा नहीं किया जाता वहाँ सभी क्रियाएँ निष्फल हो जाती है। वहीं 'ऋग्वेद' ने तत्कालीन नारियों को उच्चतम सामाजिक पद प्रदान किए थे। ''उत्तर वैदिक'' काल में भी समाज में महिलाओं की स्थिति सम्मानजनक थी 'बौद्धकाल' में महिलाओं पर कुछ सामाजिक प्रतिबंध लगाए गए, फिर भी योग्य महिलाओं को काफी सम्मान दिया जाता था। 'स्मृतिकाल' में समाज में महिलाओं के उच्च तथा निम्न दोनों प्रकार के ही उदाहरण मिलते हैं। उर्वशी, मेनका जैसी अप्सराओं ने चारू रूप लावण्य पाकर ऋषि देवगणों को मोहित किया है। कहीं साध्वी बनकर ज्ञान गंगा प्रवाहित की है तो कहीं साधक भक्त बनकर भगवान को प्रसन्न किया है। वह सत्यम्–शिवम्–सुन्दरम् की साक्षात त्रिवेणी साबित हुई है। अस्तित्व और मर्यादा का प्रमाण दिया है तो सीता की तरह अग्नि परीक्षा भी दी है। जीवन के हरेक मोड़ परपतिव्रत धर्म निभाया, संस्कृति को समृद्ध बनाया और चहारदिवारी को लांघकर हरेक क्षेत्र में श्रेष्ठता का परिचय दिया।

पर भारत में नारियों पर विभिन्न प्रकार के बंधन चहारदिवारी का प्रारंभ स्मृति काल में ही हुआ। यह कहना गलत न होगा कि नारियों की स्थिति में गिरावट में स्मृतिकाल का बहुत बड़ा हाथ है। एक ओर जहां नारियों के सम्बन्ध में कहा गया है कि मद्यपान, दुष्चरित्र, असाध्य रोग, अपव्यय, कटुवचन, केवल पुत्रियां का ही जन्म के कारण नारियों का परित्याग किया जा सकता है। जबकि पुरूष के सम्बन्ध में दूसरी तरह की नीति अपनाई गई है और कहा गया

है कि पति–शील रहित हो, व्यसनी हो, विद्या आदि गुणों से शून्य हो फिर भी पतिव्रता पत्नी को उसकी उपेक्षा न करके देवता की भांति सेवा करनी चाहिए। उसके बाद से धीरे–धीरे पितृप्रधान परिवारों के उदय से परिवार मे नारियों की स्थिति में गिरावट आने लगी । फिर समाज में सती प्रथा, बहु प्रथा तथा विधवा विवाह पर प्रतिबन्ध आदि कुरितियां फैलने लगीं।

मध्यकाल में नारी का स्वरूप

मुस्लिम आक्रमणकारियों के आने के बाद देश में नारियों पर बंधन और भी कसता गया। पहले तो नरियां युद्ध के मैदान में पुरूषों का साथ देती थी तथा अपने प्राण की आहुति भी देती थी, लेकिन मुस्लिम शासन स्थापित होने से वे शोषण और र्दुव्यवहार की शिकार होने लगी। मुस्लिम शासन काल में ही पर्दा प्रथा फैलने लगी, जिससे महिलाओं की शैक्षणिक, सामाजिक तथा धार्मिक क्रियाओं को गहरा धक्का लगा। यह सिलसिला मुगलकाल तक चलता रहा। मध्ययुगीन काल मे नारियों की स्थिति में गिरावट के बावजूद भी अनकों नारियों के गौरवपूर्ण कारनामें सुनने को मिलते हैं । विशेषकर कवित्रियों, वीरागंनाओं और शासिकाओं के रूप में जहां सल्तनतकाल मे रजिया सुल्तान ने देंश की बागडोर संभाली वही मुगलकाल में नूरजहं ने अपने असीम सौंदर्य से बादशाह जहंगीर को मोहित किया और शासन भी चलाया। मुमताज महल ने अपने प्रेम की अनुपम सौगात 'ताजमहल' का निर्माण शाहजहां से करवाया। भक्ति रस की राधिका मीराबाई ने एक अलग पहचान बनाई और इस तरह भक्त और भगवान की साकार ज्योति जलाई। वहीं क्षत्रपति शिवाजी को महान बनाने में माता जीजाबाई का हाथ था। इन्होनें शिवाजी को दैदीप्यमान बनाया, शौर्य, वीरता एवं बुद्धि कौशल निपुण बनाया। शौर्यमयी और तेजस्विनी झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने फिरंगियों की साम्राज्यवादी नीति का जमकर विरोध किया और जंग करते हुए आजादी की खातिर वीरांगना लक्ष्मीबाई ने अपनी कुर्बानी दे दी और वे वीरगति को प्राप्त हुई। प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम 1857 में एक ओर नूरानी महिला आज की बेगम हजरत महल ने क्रांतिकारी बाना पहनकर युद्ध में भाग लिया। इसी प्रकार नागालैण्ड की रानी गदनलियों ने भी आजादी की जंग में शौर्य का प्रदर्शन किया। चितौड़ की महारानी अनुपम सौंदर्य की तस्वीर पद्मिनी ने जौहर से इहलिला समाप्त कर वीरांगना की भंमिका निभाई, किन्तु अलाउद्दीन खिलजी की घृणित आकांक्षाओं को साकार नहीं होने दिया। पन्नाधाम के महान त्याग और बलिदान से आज भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं और उनके स्वाभिमानी चरित्र से आँखें डबडबा जाती है।

आधुनिक काल में नारी का स्वरूप

ब्रिटिश शासन काल के अंतिम चरणों में महिलाओं की स्थिति अत्यन्त ही खराब हो चुकी थी, सती प्रथा का चलन था। बाल विवाह प्रथा भी व्यापक रूप से फैला था, पर्दा और दहेज प्रथा भी सर्वत्र फैली था, स्त्रियाँ शिक्षा से वंचित रहने लगी थी। लेकिन अंग्रेजों के आने से भारत में पाश्चात्य सभ्यता का गहरा प्रभाव पड़ा। भारतवासियों को विदेश में जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के दौरान विदेशों में नारियों की स्थिति को देखा तब जाकर भारतीय नारी की दशा में सुधार करने की बात उत्पन्न होने लगी, क्योकि विदेशों में महिलाओं को समाज में उच्च स्थान

प्राप्त था। ब्रिटिश काल में कई भारतीय नारियाँ तथा विचारक पाश्चात्य विचारधारा के सम्पर्क में आए, जिसके कारण उन्होंनें नारियों के ऊपर विभिन्न प्रकार के लगाए गए बंधन चहारदीवारों को कम करने तथा खत्म करने के कार्य किए। जिसमें राजाराम मोहनराय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, रानाडे, दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी आदि अनेक महापुरूषों का योगदान अतुलनीय है।

राजा राममोहन राय तथा समाज सुधार के आन्दोलन से कानून द्वारा सती प्रथा पर रोक लगायी गई। विधवा विवाह को मान्यता में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का योगदान रहा। बाल विवाह पर भी कानूनी प्रतिबन्ध लगाए गए।

समाज सुधारकों ने देश के सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक जीवन में महिलाओं की सहभागिता पर बहुत जोर दिया। देश में महिलाओं के बीच शिक्षा के प्रचार उसके हितों की रक्षा और कल्याण के लिए कई संगठनों की स्थापना की गई। देश के स्वतन्त्रता आन्दोलन में अनेक महिलाओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया और अनेकों महिलाओं ने कवियत्री, लेखिका तथा समाज सुधारक के रूप में भी ख्याति प्राप्त की। महिलाओं के हितों की रक्षा के लिए कई कानून बनाए गए और पुराने कानूनों में भी संशोधन किए गए। नारी जाति के लिए एक बहुत बड़ा अभिशाप बना दहेज प्रथा। यद्यपि यह प्रथा प्राचीन समय से ही चली आ रही है, परन्तु आज के समय में इसने एक घिनौना रूप धारण कर लिया है और इसका यहाँ तक भी परिणाम निकल गया है कि दहेज के अभाव में आज कई लड़कियों का विवाह सम्पन्न नहीं हो पा रहा है।

भारत में आजादी के पश्चात महिलाओं में नवचेतना आई है। जीवन की प्रत्येक गतिविधि एवं क्रियाकलाप में महिलाएँ आगे आई है। चिकित्सा या सुरक्षा हो, घर प्रबन्ध या व्यवसाय हो, दफ्तर हो या परिवार हो, विज्ञापन या कारोबार हो प्रतिस्पर्धा या मांडलिंग हो, रूप हाट या प्रतियोगिता हो, नीति या राजनीति हो, हर जगह वजूद रखती है। आजादी हेतु स्वतंत्रता की क्रांति हो, दुग्ध एवं पशुपालन की श्वेत क्रांति हो, खेती एवं कृषि उन्नयन हरित क्रांति हो, युद्ध का उद्धोष हो या शांति के सुनहरे दिनमान आज की महिला का प्रत्येक क्षेत्र में अद्वितीय योगदान है। स्वाधीनता के पश्चात विजय लक्ष्मी पंडित, सरोजनी नायडू, मदर टेरेसा ने दूसरों के जीवन को सुन्दर बनाने में अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। वहाँ विजय लक्ष्मी पंडित ने संयुक्त राष्ट्र संघ के महत्वपूर्ण अंग महासभा अध्यक्ष पद को सुशोभित कर भारत का गौरव बढ़ाया। तो राजनीति के क्षेत्र मे इंदिरा गांधी की कूटनीति एंव दूरदर्शिता का कोई सानी नहीं रहा।

21वीं सदी में नारी का स्वरूप

आज जीवन के प्रत्येक घटना क्रम में महिलाओं का वर्चस्व व्याप्त है। महिलाएं प्रत्येक राजनीतिक दल में प्रभावी नेत्रियां है। सक्रिय राजनीति में ममता बनर्जी, सोनिया गंधी, मायावाती, शीला दीक्षित, सुषमा स्वराज, वसुन्धरा राजे सिंधिया, राबड़ी देवी, रामाबेन, जयललिता, जया जेटली, गिरिजा व्यास, मोहिनी गिरी, नजमा हेपतुल्ला इत्यादि अग्रणी है। आई0 पी0 एस0 किरण बेदी की सदस्यता, गायन क्षेत्र की अद्वितीय प्रतिभा स्वर कोकिला लता मंगेशकर, अभिनेत्री शबाना

आजमी, ऐश्वर्या राय, हेमा मालिनी, धाविका पी0 टी0 उषा, ओलम्पिक एथलीट के0 मल्लेश्वरी, अंतरिक्ष कल्पना चावला, पर्वतारोही बछेंद्रीपाल, तो वहीं टेनिस एवं बैडमिंटन जगत में भारत को नई पहचान दिलाने वाली सानिया मिर्जा तथा सायना नेहवाल, क्रिकेटर मिताली घोष, साध्वी उमा भारती, सम्पादक पत्रकार मृणाल पांडे इत्यादी महिलाओं ने नई पहचान बनाई है। इनकी प्रतिभा, क्षमता, योग्यता पर सभी नतमस्तक हैं। जिस प्रकार राजनीति में नेत्रियों की पकड़ है उसी प्रकार फिल्म जगत में अभिनित्रियों की भरमार है। साहित्य सृजन में सभी विधाओं में वे प्रतिष्ठापित हैं। सौंदर्य प्रतियोगिता में विश्व स्तर पर अग्रिम पंक्ति में हैं। विश्व सुन्दरी (मिस वर्ल्ड) का खिताब अर्जित करने वाली भारतीय सुंदरियों में जहं रीता फारिया–1966, ऐश्वर्या राय– 1994, डायना हैडन –1997, युक्ता मुखी–1999, प्रियंका चोपड़ा–2000 है, वहीं ब्रहमांड सुन्दरी (मिस यूनिवर्स) का ताज सुष्मिता सेन – 1994 में पहना है और देश का गौरव एवं सम्मान दिलवाया है।

आज की महिलाएं जागरूक हैं, सचेत हैं। गांवों में भी साक्षरता के प्रति होड़ मची है। राजनीति ने, फिल्म जगत ने उन्हें भी प्रभावित किया है। वास्तव में आज हर जगह महिलाओं का पूर्ण वर्चस्व है। दफ्तर में, घर–परिवार में, जीवन के प्रत्येक क्रिया कलाप में, यह पहल प्रमुख सकारात्मक है। आज की नारी कल के भविष्य की अधिकारी है, आज की महतारी हैं, विकास की धुरी है।

निष्कर्ष

इस तरह से प्राचीन समय में नारी के चारों तरफ विभिन्न प्रकार की बंधनरूपी चहारदीवारी उनके परिवार एवं समाज द्वारा बना दी गयी थे, परन्तु दुनिया की इस कोमल हृदय की व्यक्तित्व वाली नारी प्राचीन समय से आज तक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपना परचम लहरा चुकी हैं कई जगहों पर तो ये पुरूषों को भी अपने पीछे छोड़ चुकी है। उदाहरणार्थ– बिहार में पंचायत चुनाव एवं शिक्षक नियोजन में महिलाओं को दिया जाने वाला 50 प्रतिशत की भागीदारी ने महिलाओं में एक नये आर्थिक बोझ को अपने मजबूत कंधो पर उठाकर समाज को शिक्षित तथा समाज को नेतृत्व प्रदान किया है। इसलिए हम सभी को नारी की इस अभूतपूर्व क्षमता को सलाम करना चाहिए और उन्हें पूरी सहयोग देना चाहिए । क्योंकि किसी भी परिवार, समाज तथा देश का विकास तभी संभव है जबकि नारी को पुरूष के बराबर हर एक क्षेत्र में आगे बढ़ने का मौका दिया जाए ।

संदर्भ ग्रंथ

1. सुभाष शर्मा – *''भारतीय महिलाएं : दशा एवं दिशा''* ।
2. राम अहुजा – *''समाजिक सामस्याएं ''* ।
3. डां0 ए0 के0 चतुर्वेदी – *''इतिहास''* पृ0–**10 ए**
4. राधा मुकंद मुखर्जी – *''वोमेन इन एंन्सीयेंट इंडिया'',* पृ0–**2**
5. *मनुस्मृति,* पृ0–**913**

6. विलास आदिनाथ संघवी – *''हिस्ट्री आफ सोशल रिफर्म एमौग्स्ट हिन्दू'*
7. एम0 एस0 गौर – *''सोशल रिफर्म''*
8. *मिनिस्टरी आफ एडजुकेशन एण्ड सोशल वेलफेयर,* 1975, पृ0–**69**
9. रामाश्रय राय – *''कास्ट इन इंडियन पौलिटिक्स''* 1970, पृ0–**25**
10. डा0 ए0 के0 मित्तल– *''भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास''* पृ0–**40**